शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

श्योपुर जिले की जीवनदायिनी सीप नदी : एक विहंगावलोकन

खेमराज आर्य (शोधार्थी, इतिहास)
डॉ. परवीन वर्मा (सहायक प्राध्यापक, हिंदी)
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर, मध्यप्रदेश, भारत

भूमिका

श्योपुर जिला भारत के मध्यप्रदेश में पश्चिमोत्तर भाग में स्थित है। सीप नदी जिले की संस्कृति से गहरा नाता रखती है। इसकी जलधारा श्योपुर जिले के लिए वरदान से कम नहीं है। सीप नदी के किनारे हरियाली की छटा बिखरी हुई है। सीप नदी के किनारे अनेक मठ, मंदिर, किले, गढ़िया व प्राकृतिक स्थल स्थित हैं, जो पर्यटन व मेलों के लिए प्रसिद्ध है। कुछ वर्ष पूर्व शहर में सीप नदी एकदम साफ-सुथरी और स्वच्छ थी। इसकी स्वच्छ निर्मल धारा में श्योपुर शहर के नदी-घाटों पर युवक-युवतियाँ व बालक-बालिकाएं अठखेलियां करते नजर आते थे। लेकिन वर्तमान में शहर के गंदे नालों से यह नदी प्रदूषित हो गई है। इसके घाट भी छोटे हो गये हैं। धीरे-धीरे गाद जमा होने के कारण जल-स्तर की गहराई भी कम होती जा रही है। पहले ये सदानीरा थी, लेकिन वर्तमान में यह गर्मियों में सूख जाती है। श्योपुर जिले में उद्योग, कृषि, पशुपालन, बागवानी व जलीय जीवों के लिए जल की आपूर्ति करती है।

सीप नदी के उद्गम स्थल ग्राम पनवाड़ा से लेकर उसके समापन स्थल ग्राम रामेश्वर तक। जहाँ यह त्रिवेणी संगम में 'बनास नदी' के साथ 'चम्बल नदी' में मिलकर अपने जल को यमुना नदी में ले जाती है और फिर गंगा नदी से मिलकर बंगाल की खाड़ी तक अपनी जलधारा को ले जाती है।

जीवनदायिनी सीप नदी

"सीप नदी का उद्गम श्योपुर जिले के कराहल तहसील में स्थित एक तालाब से होता है। पनवाड़ा गाँव में अन्नपूर्णा माता ('गुरूडासन लक्ष्मी की मूर्ति) का मेला चैत्र नवरात्र में भरता है। इस कारण यह स्थान श्योपुर व शिवपुरी में एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है।"[1] यह पनवाड़ा से पश्चिम दिशा में परिवर्तित होकर बहती हुई गोरस ग्राम में प्रवेश करती है। गोरस ग्राम में पशुपालक बड़ी संख्या में निवास करते हैं। यहाँ पर्याप्त मात्रा में चारा उपलब्ध है। इस कारण गर्मियों के मौसम में राजस्थान एवं श्योपुर जिले के आसपास के पशुपालक अपने पशुओं को चार-छः माह के लिए लेकर आते हैं। फिर सीप नदी दक्षिण से पश्चिम दिशा की ओर अग्रसर होती है। यह हरे-भरे वन में बहती हुई आवदा गाँव में 'नीमोदामठ' में 'कमलेश्वर शिवमंदिर' दोनों ओर दो धाराओं में बहती है। आवदा गाँव में सिंधिया वंश के शासक माधवराव सिंधिया ने 1923 ई. में आवदा बाँध का निर्माण कराया था। वर्तमान में इस बांध से एक छोटी नहर निकाली गई है। गाँवों में यह सिंचाई का महत्वपूर्ण साधन है। जिससे ये गाँव कृषि के प्रमुख केन्द्र बन गए हैं। नीमोदामठ के कमलेश्वर शिव मंदिर में बड़ोदा

रियासत के गौड़ वंश के राजा विजय सिंह ने पीतल का एक घंटा चढ़ाया था, जो वर्तमान में भी लगा हुआ है। नीमोदामठ में कमलेश्वर शिवमंदिर के आसपास बने चबूतरे, छतरियाँ, समाधियाँ व अन्य खण्डहर प्राचीन सभ्यता की निशानी है। अब सीप नदी आगे बहती हुई महू गाँव में आती है। महू में एक गढ़ी है। महू में ही महिषासुर मर्दनी की एक मूर्ति मिली है। यह मूर्ति जिस मंदिर में स्थित थी, वह वर्तमान में खंडहर अवस्था में है। अब सीप नदी अपनी दिशा में उत्तर दिशा में अपने बहाव क्षेत्र को बदलती है। सेमल्दा हवेली, मालीपुरा गाँव की हरे-भरे प्राकृतिक क्षेत्र से बहती हुई श्योपुर शहर में प्रवेश करती है। श्योपुर शहर में सीप नदी में पूर्व दिशा से कदवाल नदी तथा दक्षिण दिशा से भादड़ी नदी आकर मिलती है। कदवाल नदी के बीच में 'गुप्तेश्वर शिवमंदिर' है जो गर्मियों को छोड़कर हमेशा जलमग्न रहता हैं। तीनों नदियों के संगम पर गौड़ वंश के राजाओं द्वारा बनवाया गया श्योपुर का किला स्थित है। श्योपुर शहर में सीप नदी के किनारे पर स्नान के लिए अनेक घाट बने हुए हैं। श्योपुर किले में 'सोनेश्वर घाट' है। इसके बाद थोड़ा आगे किले की सीमा के बाहर 'करबला घाट' है, जहाँ ताजियों का विसर्जन किया जाता है। इस्लामिक परम्परा के अनुसार करबला घाट पर एक मस्जिद भी है। इससे थोड़ा आगे 'जतीघाट' है। "यह किवदन्ती प्रचलित है कि इस घाट पर (यति और जती) नाम के दो संत रहते थे। उनमें से संत जती के नाम पर ही 'जतीघाट' नाम पड़ा है।"[2] जतीघाट एक प्राकृतिक स्थल है। जतीघाट पर संत महाराज मधुवनदास का समाधि स्थल, शिवमंदिर, हनुमानमंदिर, राधा कृष्ण मंदिर, संत यती व जती की समाधियाँ स्थित हैं। यहीं पर प्रतिवर्ष गुरू पूर्णिमा के अवसर पर भंडारे का आयोजन किया जाता है। इसके आगे चलने पर 'गिर्राज घाट' आता है, जहाँ 'तेजा दशमी' पर श्योपुर जिले का प्रसिद्ध तेजा जी का मेला भरता है। यह एक हरा-भरा प्राकृतिक स्थल है। इससे थोड़ा आगे चलने पर बंजारा डैम है। इसके बारे में यह किवदन्ती प्रचलित है कि इस बाँध का निर्माण एक बंजारे ने करवाया था। बंजारा डैम पर सिंधिया वंश का एक अभिलेख भी मिला है। बंजारा बाँध के उस पार ग्वाड़ी, मठेपुरा, हसनपुर हवेली गाँव स्थित हैं। बंजारा डैम के पास सीप नदी के किनारे दो हनुमान मंदिर स्थित है। थोड़ा आगे चलकर अगला घाट फक्कड़ चौराहा है। इस घाट पर भी एक हनुमान मंदिर स्थित है। यह घाट प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। किले की तलहटी में स्थित मालीपुरा गाँव से लेकर जाटखेड़ा गाँव तक सीप नदी के किनारे-किनारे सब्जी व फलों की खेती की जाती है।

सीप, कदवाल व भादड़ी नदियों के संगम पर स्थित श्योपुर किले का निर्माण गौड़ राजवंश के राजाओं ने कराया था। श्योपुर किले में स्थित दरबार-हॉल, रेस्ट हाउस (झाक बंगला) एवं दीवाने-आम का निर्माण ग्वालियर नरेश महाराजा माधवराव सिंधिया ने करवाया था। गौड़ वंश के राजाओं ने नरसिंह महल, पतंग बुर्ज, रानी महल (गुजरी महल) राधा वल्लभ मंदिर, सोनेश्वर शिव मंदिर, रामजानकी मंदिर, राजा इंद्रसिंह व राजा किशोरी दास की छतरियाँ, गुरूमहल आदि भवनों का निर्माण कराया था। किले में एक मस्जिद भी स्थित है। किले में स्थित प्राचीन जैन मंदिर भी प्रसिद्ध है। किले में स्थित सहरिया संग्रहालय, सहरिया जनजाति के दैनिक जीवन, उनकी लोक संस्कृति ,वस्त्राभूषण आदि की मनमोहक झाँकी को प्रस्तुत करता प्रतीत होता है। किले में गौड़

राजाओं की अश्वशाला, भोजनशाला, उद्यान आदि भी काफी आकर्षक व कलापूर्ण है। यहाँ पर प्राचीन हिंदू देवी-देवता व जैन मूर्तियों का संग्रह भी किया गया है। जिनमें अधिकांश मूर्तियाँ खंडित अवस्था में हैं, जो श्योपुर जिले के ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों से लाई गई हैं।

श्योपुर शहर में ही गुरूद्वारा, गणेश मंदिर, हजारेश्वर मंदिर, काजी जी व बीबीजी की बावड़ियाँ, कबीर आश्रम, मंशापूर्ण हनुमान मंदिर, रामतलाई हनुमान मंदिर, मकबरा व मस्जिद, सब्जी मंडी स्थित मस्जिद नये बस स्टेंड के सामने (पाली रोड) कब्रिस्तान स्थित शेरशाह सूरी के सिपहसालार मुनव्वर खाँ का मकबरा व अन्य मकबरे, ईदगाह आदि ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल हैं। श्योपुर शहर की सीमा समाप्ति पर सीप नदी के ऊपर चम्बल नहर निकली है। चम्बल नहर श्योपुर जिले की 'रीढ़' कही जा सकती है। श्योपुर जिले के लिए कृषि व पशुपालन के दृष्टिकोण से चम्बल नहर एक वरदान से कम नहीं है।

सीप नदी की कल-कल करती जलधारा के ऊपर से चम्बल नहर बहती है तो एक प्राकृतिक मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। चम्बल नहर की लहरें उठती, गिरती, इठलाती, अठखेलियाँ करती मन को आनंदित कर देती हैं। सूर्योदय व सूर्यास्त के समय सूरज की किरणें जब नदी व नहर के जल में प्रतिबिम्बत होती है तो मन में आशा व उम्मीद का नया संचार करती है। नहर के उस पार सलापुरा गाँव में मीणा छात्रावास के पास श्योपुर जिले की बाहुल्य जनजाति सहरिया द्वारा तेजा दशमी पर तेजाजी के मेले का आयोजन कई सालों से किया जाता है। तेजाजी को सीप नदी में स्नान कराने के बाद ही भाव आता है और उतरता है। फिर ये नदी प्राकृतिक रूप से हरे-भरे क्षेत्र में उत्तर-दिशा में बहती हुई पश्चिम दिशा में मुड़कर फिर उत्तर दिशा में बहने लगती है। नागदा व जाटखेड़ा गाँवों से पहले सहराना (सहरिया जनजाति की बस्ती) के किनारे ये नदी पत्थर की चट्टानों में स्वच्छ साफ जल के रूप में मन को प्रफुल्लित कर देती है। इस स्थान को भी एक प्राकृतिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अब सीप नदी बहती हुई जाटखेड़ा व नागदा गाँव पंहुचती है। पश्चिम दिशा में नागदा व पूर्व दिशा में जाटखेड़ा गाँव में पार्वती माता का मंदिर है। नागदा गाँव शिव मंदिरों (भूतेश्वर, नागेश्वर, सिद्धेश्वर) के साथ-साथ गढ़ी, छतरियों, प्राकृतिक स्थल व प्राचीन जैन मूर्ति प्राप्ति स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। नागदा के शिव मंदिरों में बने हुये कुंड में गौमुख बनाये गये हैं, जिनसे जल की अविरल धारा निकलती रहती है। इस स्थान के बारे में यह किवदन्ती प्रसिद्ध है कि 1945 की विमान दुर्घटना के बाद सुभाषचंद्र बोस छद्म वेश में रहे थे। वर्तमान में यहाँ अनाज संग्रहण के लिए 'सायलो केन्द्र' भी स्थापित किया गया है।

इन दोनों गाँवों के पश्चात् ये नदी बहती हुई रूपनगर गाँव के बाद सौंई गाँव में (पश्चिम दिशा) व ज्वालापुर गाँव (पूर्व दिशा में) में पहुंचती है। "सौंई में इस नदी के किनारे श्योपुर के गौड़ राजाओं किशन सिंह व किशोर सिंह द्वारा निर्मित गढ़ी के खण्डहर मिलते हैं। गढ़ी की दीवार व दरवाजा इसकी भव्यता को सिद्ध करते हैं। गढ़ी के पास मंदिर भी बने हुए हैं, जिनमें हनुमान मंदिर प्रसिद्ध है।"[3] इस गाँव में एक तीन मंजिला बावड़ी भी है जो जल संग्रहण का एक महत्वपूर्ण साधन थी। इस नदी के किनारे सवाई माधोपुर रोड पर पुल के पास सतियों व नाथों की अनेक छतरियाँ बनी हुई हैं।

साथ ही थोड़ा-सा ऊपर अनेक कब्रों में कब्रिस्तान के अवशेष बिखरे पड़े हैं। ये अवशेष अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण व अन्य शासकों के आक्रमणों की ऐतिहासिकता से संबधित हैं। यहाँ पर अनेक मजारें भी हैं। लेकिन अभी तक इनका पता लगाना शेष है कि ये किन से संबधित रही हैं और किस समय की हैं ? इस नदी के पूर्वी छोर पर ज्वालापुर गाँव स्थित है। जहां पर इस्लाम धर्मानुयायियों की बहुलता है। यहाँ पर एक मस्जिद व नदी के किनारे एक माता का मंदिर व हनुमान मंदिर भी स्थित है। इस गाँव में स्थित माता के मंदिर के सामने कब्रिस्तान में पुरानी कब्रें किसी युद्ध में मारे गये योद्धाओं की वीर गाथा की गवाही देती प्रतीत होती है।

कुछ आगे इस नदी में अमराल नदी पूर्व दिशा से आकर मिलती है। इस संगम पर राजपुरा की गढ़ी स्थित है। ये गढ़ी तीन मंजिला है। गढी का निर्माण राजा गोपाल सिंह गौड़ ने करवाया था। इस गढ़ी का प्रयोग श्योपुर के गौड़ राजा शिकार व आरामगाह के रूप में करते थे ऐसा लगता है। वर्तमान में संरक्षण के अभाव में ये गढ़ी खण्डहर बन गयी है। "गढ़ी के उस पार सीप व अमराल नदी के किनारे 13 खम्बों (स्तम्भों) वाली एक छतरी बनी है, जो आकर्षक व कलात्मक है। छतरी के मध्य में चरण पादुका बनी है। इस छतरी पर एक शिलालेख भी मिला है। शिलालेख में राजा और दो रानियों को उत्कीर्ण किया गया है। जिनके दोनों और पारिचारिकायें (दासियाँ) खड़ी हुई है।"[4] इस गढ़ी में अमराल नदी से पानी लेने के लिए एक कुआँ बनाया गया था, जो आज भी खण्ड़हर अवस्था में है। गढ़ी के पास मुख्य दरवाजे पर सुण्डेश्वर शिवमंदिर (सोरती का अण्ड़ा) के खण्ड़हर अवशेष मिलते हैं। इस गढ़ी से पहले रास्ते में एक मस्जिद भी बनी हुई है। सौंई में बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच कल-कल बहती हुई ये नदी गुरूनावदा (एक मध्यकालीन बावड़ी स्थित), शंकरपुर कोटर, मेवाड़ा, बहरावदा, सरोदा गाँव से गुजरती है। मेवाड़ा गाँव में नागा बाबाओं की छतरियां तथा एक दरगाह स्थित है। इसके बाद ये नदी आगे के सफर में मानपुर गाँव (वर्तमान में कस्बा) में अपना पड़ाव डालती है।

मानपुर इस नदी के किनारे श्योपुर जिले का एक महत्वपूर्ण गाँव है। मानपुर में श्योपुर के गौड़ राजाओं द्वारा एक गढ़ी का निर्माण इस नदी के किनारे पर ही किया गया था। नदी के आस-पास वृक्षों से हराभरा प्राकृतिक नजारा इस गढ़ी के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देता है। गढ़ी चारों तरफ से ऊँची-ऊँची प्राचीरों से घिरी है। "पुरातात्विक सर्वेक्षण के अनुसार इस गढ़ी का निर्माण राजा मनोहर सिंह एवं महाराजा राधिकादास गौड़ द्वारा करवाया गया था।"[5] नदी से लगे परकोटे के पास मानेश्वर महादेव मंदिर गढ़ी में स्थित है। इस मंदिर के सामने एक कुआँ भी है। गढ़ी के अन्दर कचहरी और दो कमरे जनाने हैं। गढ़ी के भीतर राजस्थानी शैली के भित्ति-चित्र बने हुए हैं। मानपुर श्योपुर जिले से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। देखरेख व संरक्षण के अभाव में मानपुर गढ़ी जर्जर होकर अपने ऐतिहासिक महत्व को खोती जा रही है। इस गढ़ी को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

मानपुर गढ़ी के दूसरे किनारे पर काशीपुर की गढ़ी इस नदी के पूर्वी छोर पर स्थित है। "काशीपुर की गढ़ी से एक सुंरग मानपुर की गढ़ी तक बनाई गई है। ये बात इस क्षेत्र के जनमानस में प्रचलित है। इस गढ़ी का मुख्य द्वार आज भी स्थित है जो इस गढ़ी की भव्यता का परिचय देता प्रतीत होता है। यहाँ गणेश व ठाकुर बाबा के

चबूतरें, गढी के अंदर महल, रनिवास, जलमहल, बीजासन माता का मंदिर, बावडी, (सीप नदी से इसमें रेहट द्वारा पानी भरने की संरचना बनी हुई है) छारबाग, हाथीथणा, अश्वशाला, घाट, सतियों की छतरियाँ आदि भी भग्नावशेष रूप में गढ़ी की ऐतिहासिकता का प्रमाण प्रस्तुत करते है।"[6] इस गढ़ी का उपयोग गौड़ राजा शिकारगाह एवं आरामगाह के रूप में करते थे। यहाँ यत्र-तत्र बिखरी इमारतें, मंदिर आदि के खंडहर स्थापत्य कला के जीते-जागते उदाहरण हैं। इस गढ़ी में गौड़ राजाओं के जागीरदार स्थायी रूप से निवास करते थे। इस गढ़ी में भित्ति चित्र भी बने हुए हैं, जो इसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि करते हैं। इस गढ़ी को भी एक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित कर इस का संरक्षण किया जा सकता है।

अब यह नदी अपनी धारा को बालापुरा, धिरोली मकडौद, गाँव से कल-कल करती हरे-भरे प्राकृतिक क्षेत्र से विचरण करती हुई अपनी दिशा पश्चिम की ओर परिवर्तित कर 'बनास नदी' के साथ त्रिवेणी संगम रामेश्वर में 'चम्बल नदी' में मिल जाती है। रामेश्वर नामक स्थान पर सीप नदी बनास नदी के साथ चम्बल नदी में मिलकर अपनी जल-धारा को बंगाल की खाड़ी तक ले जाती है। "रामेश्वर के बारे में पौराणिक कथा प्रचलित है कि जब ऋषि परशुराम को अपनी माता की हत्या के बाद कही शांति नहीं मिली तो इस स्थान पर तपस्या करने पर शांति मिली। यह किवदन्ती भी प्रचलित है कि सहरिया जनजाति अपने मृत परिजनों की अस्थियों का विसर्जन यहीं करते रहे हैं। सिंधिया वंश के माधव महाराज ने 1856 ई. में एक डाक बंगले का निर्माण करवाया था। रामेश्वर में ही महात्मा गांधी व जयप्रकाश नारायण की अस्थियों का भी विसर्जन किया गया था। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर इस त्रिवेणी संगम पर एक भव्य-मेले का आयोजन किया जाता है।"[7]

निष्कर्ष

सीप नदी श्योपुर जिले की मुख्य व जीवनदायिनी नदी है। लेकिन वर्तमान में श्योपुर शहर के गंदे-नालों के प्रदूषित जल से अत्यधिक प्रदूषित हो गई है। वर्तमान में इस नदी में पॉलीथीन व कचरे का ढेर श्योपुर शहर में नजर आता है। पूर्व में श्योपुर शहर में साफ-स्वच्छ जल की धारा बहती थी। आज श्योपुर शहर के निवासियों ने उस नदी को प्रदूषित कर दिया है। अतः सीप नदी को इस प्रदूषण से मुक्त करके इस नदी के किनारे स्थित प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण, संवर्धन एवं पुनःनिर्माण कर पर्यटन केन्द्रों के रूप में विकसित कर श्योपुर के इतिहास को राष्ट्रीय इतिहास से सम्बन्ध किया जा सकता है। सीप नदी का उद्गम व समापन श्योपुर जिले में ही होता है। इसलिए सीप नदी श्योपुर जिले की जीवन-रेखा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 पूनम पाराशर, श्योपुर जिले का सांस्कृतिक इतिहास एक अध्ययन, 2006, शोध प्रबंध (अप्रकाशित) जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, पृष्ठ 27

2 वही, पृष्ठ 207-208।

3 रूपेश उपाध्याय, चम्बल संभाग के किले, गढियां एवं प्राचीन मठ मंदिर, 2020 जिला पुरातत्व एवं पर्यटन परिषद, श्योपुर, पृष्ठ 14

4 वही, पृष्ठ 29

5 वही, पृष्ठ 33-35

6 रूपेश उपाध्याय, श्योपुर टूरिस्ट गाइड, 2019, जिला पुरातत्व एवं पर्यटन परिषद, श्योपुर, पृष्ठ 52

7 वही, पृष्ठ 53